THE RESEARCH DIALOGUE
An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
© The Research Dialogue | Volume-04 | Issue-03 | October-2025
Available online at: https://theresearchdialogue.com/
DOI: https://doi.org/10.64880/theresearchdialogue.v4i3.05

भारतीय पुनर्जागरण आंदोलन के अद्वितीय नायक महर्षि दयानंद सरस्वती : एक समीक्षात्मक विश्लेषण

[1]राहुल, [2] डॉ शगुफ्ता परवीन

[1] शोधार्थी, मंगलायतन विश्वविद्यालय अलीगढ़, असिस्टेंट प्रोफेसर इतिहास,बद्री विशाल डिग्री कॉलेज फर्रुखाबाद

[2]शोध पर्यवेक्षक;असिस्टेंट प्रोफेसर, इतिहास ,मंगलायतन विश्वविद्यालय अलीगढ़

[1]Email: rahulsaxenag@gmail.com, [2]Email: Sp.jameel@gmail.com

सारांश :

19वीं शताब्दी भारतीय इतिहास में पुनर्जागरण आंदोलन के लिए प्रसिद्ध है इस काल में तत्कालीन भारत की पतनशील परिस्थितियों को देखते हुए अनेक समाज सुधारकों ने समाज तथा धर्म में सुधार करने का प्रयत्न किया। इन समाज सुधारकों में महर्षि दयानंद सरस्वती का व्यक्तित्व विलक्षण है उनके द्वारा तत्कालीन समाज ,धर्म और राजनीति की स्थिति का व्यापक विश्लेषण किया गया। पाश्चात्य शिक्षा के प्रभाव से पृथक वेदों के आधार उन्होंने न केवल धर्म, दर्शन, के क्षेत्र में सुधार आंदोलन का नेतृत्व किया अपितु राजनीतिक, आर्थिक, शैक्षणिक व सामाजिक क्षेत्र में भी अपने विचार प्रकट किये। उनके द्वारा अपने विचारों को कार्य रूप में परिणत करने के लिए आर्य समाज नामक एक संस्था का भी निर्माण किया गया। महर्षि दयानंद सरस्वती के विचारों तथा आर्य समाज के कार्य जन सामान्य से संबंधित थे यह केवल मध्यवर्गीय शिक्षित समाज तक सीमित नहीं थे। इस प्रकार महर्षि दयानंद सरस्वती के विचारों ने न केवल भारतीय जन सामान्य में आत्मविश्वास के भाव प्रज्वलित किये वरन उन्हें राष्ट्रीय स्वतंत्रता के लिए भी प्रेरित किया। प्रस्तुत अध्ययन में महर्षि दयानंद सरस्वती के विभिन्न कार्यों का एक समग्र विश्लेषण करते हुये एक संपूर्ण चिंतक के रूप में महर्षि दयानंद सरस्वती के व्यक्तित्व का अध्ययन करने का प्रयास किया गया है। ऐतिहासिक शोध विधि का प्रयोग करते हुये विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण अपनाते हुए महर्षि दयानंद सरस्वती की रचनाओं तथा द्वितीय स्रोतों के रूप में विभिन्न लेखकों द्वारा उनके जीवन तथा कार्यों पर किए गए अन्वेषणात्मक लेखन कार्यों का प्रयोग किया गया है।

विषय संकेत: *राजधर्म, स्वराज, आर्यावर्त ,आर्यभाषा, आर्ष व अनार्ष ग्रंथ, शुद्धि।*

शोध अध्ययन:

19वीं शताब्दी का भारतीय पुनर्जागरण भारतीय इतिहास का एक प्रमुख अध्याय है। तत्कालीन भारतीय समाज सामाजिक दृष्टि से अनेक कुप्रथाओं से ग्रस्त था, अधिकतर सामाजिक कुप्रथाओं को धार्मिक स्वरूप प्रदान कर दिया गया था।

बालविवाह, विधवाओं का विवाह न होना, पर्दा प्रथा, बहु विवाह, सती प्रथा, अशिक्षा प्रमुख रूप से महिला शिक्षा का अभाव, जातिगत भेदभाव, उच्च जाति और निम्न जाति की भावना, अस्पृश्यता, निर्धनता, धर्म के मूल स्वरूप की विस्मृति, वैदिक ज्ञान का लोप, मूर्ति पूजा के नाम पर अशिक्षित जनता का शोषण, धर्म को स्वार्थ पूर्ति का साधन बना लेना, भारतीयों का धर्म परिवर्तन, इतिहास की विस्मृति, आत्महीनता की भावना, परतंत्रता का दीर्घकालीन इतिहास, वैज्ञानिक सोच का अभाव तत्कालीन भारतीय समाज और धर्म का स्वरूप बन गया था।

विदेशी शासन श्वेत व्यक्ति का भार द्वारा अपने नस्लीय आत्मविश्वास को प्रकट कर रहा था। 1857 के विद्रोह के बाद ब्रिटिश क्राउन का शासन स्थापित हो चुका था। प्रजा के साथ बिना किसी भेदभाव के व्यवहार करने का तथाकथित आश्वासन दिया जा रहा था। इस वातावरण में और ब्रिटिश शासन के प्रभाव में बंगाली भद्र लोक समाज के अनेक अंग्रेजी शिक्षित व्यक्ति पुनर्बोधन कालीन यूरोपीय विचारधारा से प्रभावित हुए थे। कुछ लोगों पर तो अंग्रेजी शिक्षा का विचित्र प्रभाव प्रदर्शित हो रहा था, यद्यपि यह लोग तर्क और विवेक पूर्ण विचारों के समर्थक होने का दावा करते थे किंतु इनके विचारों का विरोधाभास स्पष्टतः देखा जा सकता है जो हिंदू धर्म की हर चीज को बिना तार्किक विश्लेषण किए हुए निंदित करने को ही आधुनिकता समझते थे बंगाल में यंग बंगाल आंदोलन के विचारकों में यह प्रभाव देखा जा सकता है। माधव चंद्र मलिक ने लिखा है कि यदि हम हृदय से किसी चीज से घृणा करते हैं तो वह है हिंदुवाद।[1] वहीं राजा राममोहन राय के नेतृत्व में बंगाल में एक सुधार आंदोलन प्रारंभ हुआ जिसने सती प्रथा को कानूनी रूप से बंद करवाया तथा प्रेस की स्वतंत्रता तथा अनेक सामाजिक सुधारो के लिए कार्य किया। जहां तक राजनीतिक सुधारो का प्रश्न है राजा राममोहन राय का दृष्टिकोण तत्कालीन परिवेश में ब्रिटिश शासन को भारतीयों के लिए लाभकारी मानता था।[2] यद्यपि उनके द्वारा दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों में हुए स्वतंत्रता आंदोलन का समर्थन भी किया गया। स्वराज और स्वदेशी की राजनीतिक अवधारणा का उनके चिंतन में अभाव रहा। जहां तक स्वामी विवेकानंद का संबंध है उन्होंने अपने आप को राजनीतिक चिंतन से पृथक रखने का प्रयास किया।[3] महर्षि दयानंद सरस्वती का व्यक्तित्व इस दृष्टि से अनूठा है। पुनर्जागरण कालीन चिंतकों में संपूर्ण चिंतन, दूरदर्शीय चिंतन, भारतीय समस्या को समझते हुए उसके संपूर्ण समाधान तथा राष्ट्रीयता के साथ अंतर्राष्ट्रीय सद्भाव का विचार तथा विभिन्न संप्रदायों को सत्य के आधार पर जोड़ने की वैज्ञानिक विचारधारा केवल महर्षि दयानंद सरस्वती में दिखाई देती है। यह अलग बात है कि राजनीतिक लोग महर्षि दयानंद सरस्वती और उनकी विचारधारा को उतना महत्व नहीं देते जितना की उन व्यक्तित्व को महत्व देते हैं जो जातिगत आधार पर अथवा विचार धारा के आधार पर उनके राजनीतिक हितों के लिए उपयोगी है। परंतु महर्षि दयानंद सरस्वती के कार्यों के लिए राजनीतिक प्रशंसा कोई महत्व नहीं रखती। महर्षि दयानंद सरस्वती और उनके द्वारा प्रारंभ किए गए आर्य समाज ने न केवल भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में बल्कि भारतीय समाज और जीवन के विभिन्न पक्षों में अनेक महान विभूतियों को उत्पन्न कर और व्यक्ति के हृदय में सच्चाई को स्थापित कर जो उन्नयन का कार्य किया है वह अविस्मरणीय रहेगा, और सत्य की खोज करने वाला सच्चा पथिक अपने जीवन के लक्ष्य की प्राप्ति के लिए अपने रास्ते में प्रकाश प्राप्त करता रहेगा।

महर्षि दयानंद सरस्वती के विभिन्न योगदान का अध्ययन करने से पहले यह समझ लेना आवश्यक है कि महर्षि दयानंद सरस्वती पाश्चात्य शिक्षा प्राप्त व्यक्ति नहीं थे वह तो भारतीय चिंतन परंपरा तथा संन्यास परंपरा की एक विशिष्ट विभूति थे जिन्होंने अपना जीवन मनुष्य के कल्याण के लिए समर्पित कर दिया। उनके विभिन्न सुधारो का आधार वेद तथा वैदिक मनीषियों की आर्ष परंपरा थी। वह तो उस परंपरा के विभूति थी जो ब्रह्मा से जैमिनी ऋषि पर्यंत व्याप्त थी और यही परंपरा उनके सभी कार्यों का आधार थी। एक और वह कठोर सिद्धांत परक थे वहीं लोक कल्याण के लिए लचीला दृष्टिकोण भी रखते थे। यही कारण था की संस्कृत भाषा का प्रयोग करने वाला एक कौपीन धारी संन्यासी आर्यभाषा हिंदी का समर्थक बन गया तथा वस्त्र धारण कर मनुष्य मात्र के कल्याण के लिए निकल पड़ा। दयानंद की सत्य की खोज ईश्वर के सही स्वरूप को जानने को लेकर थी, जिसका प्रारंभ मूर्ति पूजा पर प्रश्न से प्रारंभ हुआ था बहन और चाचा की मृत्यु के बाद जिसने संसार के प्राणियों के सम्मुख उपस्थित मृत्यु रुपी दुख का अनुभव किया । इस यात्रा के क्रम में मूल शंकर , शुद्ध चैतन्य, दयानंद धर्म व ईश्वर के नाम पर चल रहे विभिन्न संप्रदायों और उनके विश्वासों का मूल्यांकन करते हुए साथ ही विभिन्न योगियों से योग के विभिन्न अनुभव प्राप्त करते हुए, सत्य का अन्वेषण करते हुये दण्डी गुरु बिरजानंद के आश्रम में मथुरा में उपस्थित हुये। गुरु से व्याकरण का ज्ञान प्राप्त किया तथा आर्ष व अनार्ष ग्रंथों के विवेक का सूत्र। इसके बाद भी उनके धार्मिक विचार विकसित होते रहे। पाखंड खंडनी पताका, काशी शास्त्रार्थ, विभिन्न मतावलंबियों से शास्त्रार्थ, वेदों के सत्य ज्ञान का पथिक जिस वैज्ञानिक व तार्किक आधार पर वेदों का अर्थ प्रकट करता है वह अद्वितीय है। दयानंद ने घोषणा की वेद सभी सत्य विद्याओं की पुस्तक है। वेदों में इतिहास नहीं है। वेदों की अपनी व्याख्या द्वारा दयानंद ने वेदों को राजनीति, आर्थिक , वैज्ञानिक, सामाजिक, धार्मिक सभी विद्याओं का स्रोत बना दिया। यह नहीं कहा जा सकता कि दयानंद ने वेदों की मनमानी व्याख्या की दयानंद ने जिस सिद्धांत का प्रयोग किया वह निरुक्त और अष्टाध्यायी जैसे व्याकरण ग्रन्थों पर आधारित था। अपने सिद्धांतों के प्रतिपादन के लिए दयानंद ने शास्त्रार्थ का प्रयोग किया। धर्म के सत्य स्वरूप को प्रकट करने के इस प्रयास ने सामाजिक सुधारो के लिए भी आधार प्रदान कर दिया। दयानंद के कार्य ने उनके अनेक शत्रु उत्पन्न कर दिए। दयानंद को परास्त करने के लिए विरोधियों ने छल -कपट का प्रयोग करने से भी अपने को विरत नहीं रखा। अनेक बार उनके प्राण लेने के प्रयास किए गए और विरोधियों को अंततः सफलता भी मिल गई।

दयानंद के कार्यों का विश्लेषण निम्नलिखित बिंदुओं में किया जा सकता है।

1. **राष्ट्रीयता के क्षेत्र में** पुनर्जागरण कालीन चिंतकों में दयानंद ने राष्ट्रीयता के जो विचार व्यक्त किये वस्तुत: उसने भारत की स्वतंत्रता के लिए आधार का काम किया। दयानंद का स्पष्ट उद्घोष था की शासक स्वदेश में उत्पन्न होना चाहिए। भारत भारतीयों के लिए है। अच्छे से अच्छा विदेशी राज्य भी स्वदेशी राज्य से अच्छा नहीं होता।[4] स्वराज का विचार, स्वदेशी, विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार, आर्य भाषा (हिंदी) का प्रयोग दयानंद के राष्ट्रवादी दृष्टिकोण को स्पष्ट करता है। दयानंद ने अपने ग्रंथों में भारत की परतंत्रता का कारण आपसी फूट को बताया है। राष्ट्रीय चिंतन के क्षेत्र में दयानंद जिन विचारों को व्यक्त कर रहे थे वह भारतीयों में आत्मविश्वास उत्पन्न करने वाले थे। भारतीय सभ्यता और संस्कृति में विश्वास और गर्व उत्पन्न करने वाले थे। दयानंद राजा राममोहन राय की तरह

विदेशी शासन को भारत के लिए उपयोगी नहीं मानते थे। राज व्यवस्था कैसी हो इसके विषय में दयानंद प्राचीन भारतीय मनीषियों से प्रेरणा प्राप्त करते हुए अपने ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश के षष्ठम समुल्लास में प्राचीन भारतीय राजधर्म के जनतांत्रिक स्वरूप को स्पष्ट करते हैं। देखा जाए तो दयानंद की दृष्टि में भारत के भविष्य की राजनीतिक व्यवस्था की एक सुदृढरण आधारशिला विद्यमान थी। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में आर्य समाज से जुड़े व्यक्तियों का योगदान प्रमुख रहा है। आर्य समाज के मंदिर व विद्यालय क्रांतिकारियों की शरण स्थली रहे हैं। इसके अतिरिक्त दयानंद सरस्वती ने तत्कालीन परिवेश में यह घोषणा की कि आर्यावर्त ही आर्यों का मूल निवास स्थान है। सृष्टि के प्रारंभ में आर्य यहीं आकर बसे थे। यहां इससे पूर्व कोई और नहीं रहता था।[5] इस प्रकार महर्षि दयानंद सरस्वती ने उन इतिहासकारों जो कि मध्य एशिया अथवा यूरोप में आर्यों का मूल निवास स्थान ढूंढ रहे थे के समक्ष आर्यावर्त को आर्यों का मूल निवास स्थान सिद्ध करते तथा चक्रवर्ती आर्यों के राज्य की उद्घोषणा करते हुए भारतीय राष्ट्रीयता के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। राजपूताने के राजाओं को राजधर्म की शिक्षा देते हुए ही महर्षि ने अपने शरीर का उत्सर्ग कर दिया। महर्षि दयानंद सरस्वती ने मतान्तरण की समस्या को भी समझा जो कि भारतीय राष्ट्र की एकता में बाधक थी। एक बार हिंदू धर्म छोड़ने वाला व्यक्ति पुनः चाहने पर भी हिंदू नहीं बन सकता था । महर्षि दयानंद सरस्वती ने शुद्धि का रास्ता एक बार पुनः खोल दिया। महर्षि दयानंद सरस्वती ने राजनीतिक क्षेत्र में जनतंत्रात्मक विचार व्यक्त किए जो उनके आर्य समाज के संगठनात्मक ढांचे से भी स्पष्ट है।

2. **सामाजिक सुधार और महर्षि दयानंद** वेदों के आधार पर महर्षि दयानंद सरस्वती ने उन परंपरागत मान्यताओं को चुनौती दी जो कि तत्कालीन समाज में धर्म के नाम पर चली आ रही थी। सर्वप्रथम तो महर्षि ने जन्मगत जाति प्रथा का खंडन किया और गुण, कर्म, स्वभाव पर आधारित वर्ण व्यवस्था के सिद्धांत का समर्थन किया। जाति व्यवस्था के समर्थन में प्रस्तुत किये जा रहे आधार को कि ब्राह्मण ईश्वर की सिर से उत्पन्न हुए हैं क्षत्रिय भुजा, वैश्य, उरु व शूद्र पैरों से उत्पन्न हुए हैं महर्षि दयानंद सरस्वती द्वारा इस अर्थ को कठोरता के साथ चुनौती दी गई।[6] उनके अनुसार गुण, कर्म, स्वाभाव व्यवस्था के अनुसार समाज रूपी शरीर में ज्ञान संपन्न व्यक्ति ब्राह्मण, शारीरिक रूप से बलिष्ठ व्यक्ति क्षत्रिय, व्यापार तथा कृषि कर्म में लगे व्यक्ति वैश्य, तथा शूद्र वह व्यक्ति है जो बुद्धिमान व अन्य कार्यों को करने में सक्षम न होने के कारण श्रेष्ठ तीनों वर्णों के यहां कार्य कर कर अपनी आजीविका को प्राप्त कर सकता था यह सभी व्यक्ति आर्य हैं और इनमें कोई उच्चता और निम्नता का भेद नहीं है। इस प्रकार वैदिक आधार पर जन्मगत जाति व्यवस्था का खंडन महर्षि की एक महान देन है। इसी प्रकार महर्षि दयानंद सरस्वती पुरुषों के समान स्त्रियों को भी सभी प्रकार की विद्याओं के योग्य मानते हैं। उन्होंने पौराणिक धारणा का खंडन कर दिया कि स्त्रियों का यज्ञोपवीत नहीं होता तथा उन्हें वेद मंत्रों का अधिकार नहीं है। महर्षि दयानंद की दृष्टि में मानव मात्र को वेद पढ़ने का अधिकार है।[7]

3. **आर्थिक क्षेत्र में देन** अपने विभिन्न गंन्थों में महर्षि दयानंद सरस्वती ने भारत की आर्थिक दुर्दशा को समझते हुए आर्थिक क्षेत्र में भी अपने विचार व्यक्त किए हैं बल्कि महर्षि ने अपने विचारों को कार्य रूप में परिणीत करने का भी प्रयास किया है। भारतीय युवाओं को आधुनिक तकनीकी में प्रशिक्षित करने के लिए महर्षि जर्मनी के विद्वानों से पत्र व्यवहार में संलग्न थे [8] स्वदेशी और बहिष्कार भी आर्थिक सशक्तिकरण की दशा में महर्षि का एक अभियान था। राजकीय कर व्यवस्था कैसी होनी चाहिए इस विषय में

भी महर्षि लिखते हैं कि कर योग्यता अनुसार लेना चाहिए। तथा किसान तथा मजदूरी करने वाले वास्तव में राजाओं के भी राजा है। महर्षि ने गौ रक्षा के लिए एक आंदोलन ही शुरू कर दिया था। इस संदर्भ में उन्होंने गौकरुणानिधि पुस्तक लिखी थी। गायों की तथा अन्य पशुओं की रक्षा के विषय में महर्षि न केवल धार्मिक आधार प्रदान करते हैं बल्कि भारत की उन्नति के लिए इन गाय व अन्य पशुओं के आर्थिक महत्व को भी स्थापित करते हैं।

4. **शैक्षिक क्षेत्र में देन** महर्षि दयानंद सरस्वती ने शिक्षा व्यवस्था के संबंध में भी अपने विचार व्यक्त किए हैं तथा सिद्धांत स्थापित किए हैं। शिक्षा व्यवस्था के क्षेत्र में निशुल्क व अनिवार्य शिक्षा महर्षि का एक प्रमुख सिद्धांत है। गुरुकुल में राजा तथा गरीब सभी के बच्चे के लिए एक समान व्यवस्था का महर्षि विधान करते हैं।[9] इस क्षेत्र में वह राजकीय कर्तव्य निर्धारित करते हुए अपने बच्चों को विद्यालय न भेजने वाले माता-पिता के लिए दंड की भी व्यवस्था करने को कहते हैं। महर्षि ने शिक्षा व्यवस्था का एक विस्तृत पाठ्यक्रम तैयार किया। शिक्षक व शिक्षार्थी के लिए आचरण का विधान किया। आध्यात्मिक व भौतिक उन्नति के सिद्धांतों का प्रणयन किया। स्त्री व पुरुष दोनों के लिए समान शिक्षा की व्यवस्था की यद्यपि वह सह शिक्षा के समर्थक नहीं थे। महर्षि के सिद्धांतों को आर्य समाज द्वारा तत्कालीन परिवेश में आगे बढ़ाते हुए कन्या गुरुकुलों की स्थापना की। मुंशी राम द्वारा स्थापित गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, महात्मा हंसराज द्वारा स्थापित दयानंद एंग्लो वैदिक कॉलेज महर्षि दयानंद सरस्वती के शैक्षिक विचारों के साथ-साथ आधुनिक शिक्षा व्यवस्था को लेकर विद्यार्थियों का चरित्र निर्माण कर रहे है।

5. विभिन्न संप्रदाय व मतों का समीक्षात्मक अध्ययन महर्षि दयानंद सरस्वती पुनर्जागरण काल के वह महापुरुष है जो विवेक, तर्क के आधार पर सत्य की खोज मानव जीवन का परम लक्ष्य मानते हैं। सभी धर्म समान है कहकर एक सामान्यीकरण का प्रतिपादन न करते हुए तार्किक आधार पर विभिन्न संप्रदायों का समीक्षात्मक अध्ययन करते हैं। आर्यावर्त में उत्पन्न विभिन्न संप्रदाय चाहे वह पौराणिक हिंदू धर्म हो, चाहे जैन बौद्ध, सिक्ख मत की तार्किक समीक्षा हो, चाहे मध्यकालीन भक्ति आंदोलन के विभिन्न संप्रदाय हो, ईसाई रिलिजन हो या इस्लामी मजहब महर्षि ने सभी का विवेक संगत बिना किसी राग द्वेष के समीक्षात्मक चिंतन किया है।[10] तथा मनुष्य के लिए विवेक द्वारा सत्य की खोज का रास्ता प्रकट किया है। इस दृष्टि से महर्षि दयानंद सरस्वती अद्वितीय है।

6. **साहित्यिक देन** हिंदी भाषा व साहित्य को महर्षि दयानंद सरस्वती की विशेष देन है। उन्होंने हिंदी को राष्ट्रभाषा स्वीकार किया तथा अपने प्रमुख ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश की रचना हिंदी भाषा में की। आर्य भाषा हिंदी में ऋग्वेद का सातवें मंडल तक तथा यजुर्वेद का भाष्य प्रस्तुत किया। इसके अतिरिक्त आर्याभिविनय, व्यवहार भानु, ऋग्वेद भाष्यभूमिका, गौकरुणानिधि आदि ग्रंथों का प्रणयन किया। महर्षि के विचारों का प्रभाव तत्कालीन साहित्य पर स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। महर्षि से प्रभावित अनेक आर्य विद्वानों ने आध्यात्मिक दार्शनिक क्षेत्र में अनेक ग्रन्थों की रचना की। सत्यार्थ प्रकाश तथा व्यवहार भानु में प्रयुक्त उनकी तार्किक शैली जो व्यंग्य का पुट लिए हुए हैं दर्शनीय है।

7. **दार्शनिक आध्यात्मिक क्षेत्र में देन** महर्षि दयानंद सरस्वती दार्शनिक क्षेत्र में द्वैत और अद्वैतवाद के समक्ष वैदिक त्रैतवाद की स्थापना करते हुए ईश्वर, जीव तथा मूल प्रकृति तीनों को अनादि माना। [11] मोक्ष से पुनरावर्तन का वैदिक सिद्धांत प्रस्तुत किया तथा वेदों के आधार पर एकेश्वरवाद के सिद्धांत का समर्थन किया।

निष्कर्ष उपरोक्त तथ्यों के सम्यक विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि पुनर्जागरण कालीन भारतीय चिंतकों में महर्षि दयानंद सरस्वती का व्यक्तित्व अनूठा है और उन्होंने उन समस्त विषयों पर काम किया है जो भारतीय राष्ट्र की उन्नति के लिए अत्यंत आवश्यक हैं। तर्क, विवेक का दृष्टिकोण अपनाते हुए सत्य के निर्णय करने का सिद्धांत उन्होंने जन सामान्य तक पहुंचाने का कार्य किया। भारतीय राजनीति, सामाजिक, शैक्षिक, आर्थिक, दार्शनिक, ,साहित्यिक, सभी क्षेत्रों में महर्षि दयानंद सरस्वती का अप्रतिम योगदान है।

संदर्भ सूची

1.नवनी डॉक्टर आभा और डॉक्टर नीरज जायसवाल, भारतीय पुनर्जागरण के प्रमुख विचारक (2016), भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली, पृष्ठ 43

[2].राजा राममोहन राय के राजनीतिक विचारों का विश्लेषण करने पर शोधार्थी द्वारा प्राप्त निष्कर्ष (देखें, दत, कार्तिक चंद्र, राजा राममोहन राय जीवन और दर्शन, प्रथम संस्करण साहित्य अकादमी नई दिल्ली, पृष्ठ 314)

[3]. देखें ,भारतीय डॉक्टर भवानी लाल, स्वामी दयानंद और स्वामी विवेकानंद एक तुलनात्मक विवेचन,(2018) विजय कुमार गोविंद राम हसानंद, नई दिल्ली, पृष्ठ 221

[4]. देखें, सरस्वती दयानंद, सत्यार्थ प्रकाश, आर्यावर्त प्रकाशन अमरोहा, पृष्ठ 187

5. सरस्वती दयानंद, सत्यार्थ प्रकाश, आर्यावर्त प्रकाशन अमरोहा, पृष्ठ[6]. देखें, सरस्वती दयानंद, सत्यार्थ प्रकाश, आर्यावर्त प्रकाशन अमरोहा, पृष्ठ 77-78

7. वहीं, पृष्ठ 67-68.

8 . धर्मवीर आचार्य एवं देवकर्णी आचार्य (संपा.). (2017). महर्षि दयानंद सरस्वती के हस्तलिखित पत्र. अजमेर: वैदिक पुस्तकालय,पृष्ठ 256.

[9]. सरस्वती दयानंद, सत्यार्थ प्रकाश, आर्यावर्त प्रकाशन अमरोहा, पृष्ठ 40-41

10. देखें, सरस्वती दयानंद. सत्यार्थ प्रकाश आर्यावर्त प्रकाशन अमरोहा, सत्यार्थ प्रकाश भूमिका पृष्ठ 12-16.

11.सरस्वती दयानंद, सत्यार्थ प्रकाश, आर्यावर्त प्रकाशन अमरोहा, पृष्ठ 172

Cite this Article:

[1]राहुल, [2] डॉ शगुफ्ता परवीन, **भारतीय पुनर्जागरण आंदोलन के अद्वितीय नायक महर्षि दयानंद सरस्वती : एक समीक्षात्मक विश्लेषण,** The Research Dialogue, Open Access Peer-reviewed & Refereed Journal, pp.40–46. https://doi.org/10.64880/theresearchdialogue.v4i3.05

This is an Open Access Journal / article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License CC BY-NC-ND 3.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited. All rights reserved

CERTIFICATE

of Publication

This Certificate is proudly presented to

राहुल एवं डॉ शगुफ्ता परवीन

For publication of research paper title

भारतीय पुनर्जागरण आंदोलन के अद्वितीय नायक महर्षि दयानंद सरस्वती : एक समीक्षात्मक विश्लेषण

Published in 'The Research Dialogue' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and E-ISSN: 2583-438X, Volume-04, Issue-03, Month October, Year-2025.

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Editor- In-chief

Dr. Neeraj Yadav
Executive-In-Chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at: https://theresearchdialogue.com/

DOI: https://doi.org/10.64880/theresearchdialogue.v4i3.05